चतेउर

लोक चित्रकला की पारम्परिक शैली

विनोद मिश्र 'सुरमणि'

चतेउर

लोक चित्रकला की पारम्परिक शैली

विनोद मिश्र 'सुरमणि'

चतेउर

लोक चित्रकला की पारम्परिक शैली

विनोद मिश्र 'सुरमणि'

प्रधान सम्पादक
डॉ. धर्मेन्द्र पारे

सम्पादक
अशोक मिश्र

जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद भोपाल का प्रकाशन

प्रकाशक - निदेशक
जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स
भोपाल-462002 फोन-0755-2661948, 2661640
E-mail : mplokkala@rediffmail.com,
mptribalmuseum@gmail.com
web. : www.mptribalmuseum.com

प्रकाशन - वर्ष 2022

मूल्य - रु. 50/- (रुपये पचास केवल)

स्वत्वाधिकार - जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

शब्दांकन - जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

मुद्रण - मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल

- पुस्तिका से संबंधित समस्त विवादों का न्यायालयीन कार्यक्षेत्र भोपाल होगा।
- पुस्तक में छपी सामग्री के किसी भी माध्यम द्वारा उपयोग के पूर्व अकादमी से अनुमति लेना आवश्यक होगी।
- पुस्तिका में प्रकाशित समस्त सामग्री संकलनकर्ता, लेखक की अपनी है, आवश्यक नहीं है कि अकादमी इससे सहमत हो।

ISBN - **978-93-92148-21-7**

अनुक्रम

चित्रकला और बुन्देलखण्ड /15
दतिया की कलम (चित्रकला) /19
चतेउर में रंग निर्माण एवं उपकरण /24
लोक–उत्सवों के चित्र / 29
पूजन–पट का चित्रांकन /37
विवाह की चतेउर /48
मंगल वस्तुओं पर चित्रांकन /61
बाँस वस्तुओं पर चित्राकंन / 68
बुन्देलखण्ड के भित्ति–चित्रों में रामकथा /75
दतिया की चतेउर /86
सांझी /91
दतिया के चित्रकार /101
पारम्परिक चतेउरी परिवार /108
संदर्भ ग्रंथ /120

ISBN 978-93-92146-21-7
9 789392 148217

जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् भोपाल का प्रकाशन

मध्यप्रदेश माध्यम, 2022
Website : www.mpmadhyam.in
मुद्रक : शब्द आफसेट प्रा. लि.

बुन्देली साहित्य-३

बुन्देली भाषा साहित्य का इतिहास

(तुलनात्मक अध्ययन)

डा० रामनारायण शर्मा

बुन्देली भाषा साहित्य का इतिहास

(तुलनात्मक अध्ययन)

डॉ. राम नारायण शर्मा

लेखक- डा. राम नारायण शर्मा
६९५/३ सिविल लाइन्स
झाँसी, उ.प्र.
दूरभाष- ४४२०२६

प्रकाशक- डा. श्रीमती सुशीला शर्मा
६९५/३ सिविल लाइन्स
झाँसी.उ.प्र.
दूरभाष- ४४२०२६

सर्वाधिकार- प्रकाशक के अधीन सुरक्षित

मुद्रक- वीर बुन्देलखण्ड प्रेस
गुसाईपुरा झाँसी- फो. ४४०९३१

प्रकाशन वर्ष- सं. २०५८ वि, सन् २००१ ई.

मूल्य- दो सौ पच्चीस रुपये

Bundeli Bhasha Sahitya Ka Itihash.
By - Dr.Ram Narain Sharma

विषय विकास

(अ) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास पृ.-१
(ब) बुन्देली भाषा का उद्‌भव और विकास। पृ.-१
(स) बुन्देली साहित्य का इतिहास और काल-विभाजन। पृ.-९

(१) शौर्य्य काल एवं गाथा काल (१० वी. से १४ वी. शदी पृ.)

राजनीतिक पृष्ठभूमि- पृ. १२, सामाजिक प्रवृत्तियाँ एवं साहित्यिक परिदृश्य- पृ. १३, रासो काव्य- आल्हा और जगनिक - पृ. १४, आल्हा के अन्य पाठ - पृ. २१, शौर्य्य काल में गाथा-साहित्य पृ.- २३, सारंगा-भारंगा - पृ. २३, ढोला मारु (अनुराग कथा) - पृ. २५, धीरा-विजैया (शौर्य्य प्रतिमान) - पृ. २६, संत वसंत (सहोदरानुराग) - पृ. २९, सुरहिन (भावना-परक) - पृ. ३१

फुटकल साहित्य

राछरे- लाखन की रानी का राछरा (संस्कृति गीत) पृ.- ३५, कजरियँन का राछरा शौर्य्य एवं संस्कृति काव्य पृ.- ३७, कजरियँन का राछरा (लोक भाषा काव्य) - पृ. ४२, पवारै- जगदेव का पवारो पृ.- ४३, मथुरावली का राछरा पृ.- ४४, कारसदेव की गोटें - पृ. ४६, उरग का राछरा पृ.- ४९, सैर-सोहर आदि गीत पृ.- ५३, बुन्देली साहित्य चित्रकला में - पृ. ५६, उद्धों से उपजी सामाजिक स्थिति के गीत - पृ. ५७, बुन्देली वीरों की वानिकी का बखान गीत - पृ. ५८

(२) उपासना काल और लीलामृत काल (१४ वी. से १७ वी. शदी)

राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक स्थिति पृ. ६०, सांस्कृतिक- चेतना पृ.-६२, उपासना कालीन- साहित्य के प्रेरणा पक्ष - पृ.-६३, भक्ति काव्य के प्रमुख काव्यकार- पृ. ६६, विष्णुदास - पृ. ६६, हरीराम व्यास - पृ. ६६, कृपाराम - पृ. ६८, तुलसीदास - पृ. ६८, बुन्देली लोक साहित्य में तुलसी के उपासना भाव एवं संस्कारी भाव पृ.- ७३, रमटेरा - पृ.७३, दिनरी-पृ.७९, देवीगीत-पृ.८०, कहरवां-पृ.८१, नौनाचमारी-पृ.८२, वसुदेवा गीत-पृ.८२, मातृभक्ति-पृ.८३, बुन्देले हरबोलों का गीत-पृ.८४, संस्कारिक साहित्य-पृ. ८५, तुलसी साहित्य में संस्कार-पृ.८५, लोक साहित्य में संस्कार गीत-पृ.८७-९४। अन्य कवि- बलभद्र मिश्र - पृ.९५, केशवदास - पृ. ९५, रामसाह - पृ.९९, राय प्रवीण-पृ. १०३, गुलाव कवि पृ.-१०५, सगुण कृष्ण भक्ति काव्य - पृ. १०६, समानान्तर लोक साहित्य में कृष्ण भक्ति के रूप - पृ. ११२, अन्य कवि- बलभद्र कायस्थ - पृ. १२४, मोहन- पृ. १२४, सुन्दर कवि- पृ. १२८, बिहारी लाल- पृ. १२९, भूषण- पृ. १३१, प्राणनाथ- पृ. १३३, मंडन मिश्र- पृ. १३४, प्रवीण कविराय- पृ. १३५

(३) श्रृंगार काल एवं फड़ साहित्य काल (१७ वी. से १९ वी. सदी)
सामान्य विचार पृ. - १३६
राजनैतिक, सामाजिक, दशा एवं धार्मिक - पृ. १३७, साहित्यिक प्रवृत्तियाँ - पृ. १३८-१४०, पूवार्द्ध के प्रतिनिधि कवि- पृ.-१४०, छत्रसाल- पृ.१४०, अक्षर अनन्य- पृ.१४९, गोरेलाल 'लाल' - पृ. १५०, श्रृंगार काल के मिश्र कवि पृ.- १५२, (कोविद - पृ.१५२, हरिसेवक - पृ. १५३, राजधर - पृ. १५४), सतसई परम्परा पृ.-१६०, अन्य कवि पृ.-१६३, कवि ठाकुर दास - पृ.१६३, श्रीपति- पृ. १६७, निवाज- पृ. १६७, पृथ्वीसिंह रस निधि- पृ. १६८, बक्सी हंसराज- पृ.१६९, खंडन- पृ. १६९, गोप कवि - पृ.१७०, हितराम कृष्ण - पृ. १७१, रूप साहि - पृ. १७२, गुमान मिश्र - पृ. १७२, समानान्तर लोक साहित्य पृ. १७३, अमान सिंह का राछरौ - पृ. १७४, अमान सिंह के दरवारी कवि - पृ. १७९, श्रृंगार-रीति काव्य- पृ.१८१, पावस और विरह गीत - पृ. १८७, कवि बोधा, पद्माकर-ठाकुर की त्रिवेणी पृ.- १८८-१९८, खुमान - १९८, चरखारी के चार बंदीजन कवि- प्रहलाद, वेताल, मान, प्रताप साहि- पृ. १९९, दामोदर देव - पृ. २०२, नवल सिंह - पृ. २०२, पद्माकर वंश परम्परा के दो कवि (अम्बाप्रसाद, अम्बुज, गदाधर भट्ट) - पृ. २०३, हदेश - पृ. २०७, सरदार कवि - पृ. २०८, हरिजन कवि - पृ. २०९, परमानन्द लल्ला - पृ. २१०।
श्रृंगार काल का उत्तरार्द्ध- (सं. १८०० वि. से सं. १९०० वि. तक) पृ.- २११
कवित्रयी काल पृष्ठ.-२१२ ईसुरी - पृ. २१२, गंगाधर पृ.- २२८, ख्यालीराम पृ.-२३१, खूबचन्द- पृ.२३४, अन्य फागुन गीत, लोक संस्कार के गीत - पृ.२३६, फणीन्द्र दीक्षित - २५३, श्रृंगार कालीन बुन्देलखण्ड के मुसलमान कवि - पृ. २५४
(४) आधुनिक काल और वार्ता काल (१९ वी सदी से आज तक)
राजनीतिक, सामाजिक परिवर्तन, साहित्यिक परिदृश्य एवं प्रवृत्तियाँ - पृ. २५६-२६१, बुन्देली भाषा में सृजन के भाव - पृ. २६१।
चतु:रंगिनी काल का पूर्वाद्ध- पृ.-२६३, प्रतिनिधि कवि और काव्य (रसिकेस - पृ. २६३, राधालाल गोस्वामी - पृ. २६३, रामचरन गुप्त - पृ. २६४, बल्देव प्रसाद - पृ. २६५, काली कवि - २६६, वृषभान कुँवारी - २६८), काव्य चतुष्टय काल- पृ.-२६९, चतुष्टय काव्य और कवि पृ.- २७०, चतुरेश नीखरा - पृ. २७१, चतुरेश पाराशर - पृ. २७४, आचार्य चतुर्भुज 'चतुरेश' - पृ. २७५, चतुर्भुज शर्मा चतुरेश - पृ. २८७, अन्य कवि पृ.२८८, एनानन्द - पृ. २८८, लाला भगवान दीन - पृ. २९०, मदनेश - पृ. २९१, बुन्देलखण्ड के रासो पृ.२९६, बुन्देलखण्ड के रासो कवि- पृ. २९७, जगनिक पृ.-२९७, भांडेरी पृ.-२९७, सबसुख पृ.-२९७, गुलाब पृ.-२९८, साहिबराय पृ.

-२९९, किसुनेश पृ.-२९९, श्रीधर - पृ. ३०१, आनन्द सिंह पृ.-३०२, द्विज किशोर पृ. -३०२, भग्गीदाउजू पृ.-३१०, भैरो पृ.-३११, कल्यान सिंह पृ.-३११, दान पृ.-३१३, मदनेश, द्वारिकेश पृ.-३१३,३२२,३२४, बुन्देली रासो का काव्यधार पृ.-३१४, बुन्देली राछरे-पमारे पृ.-३१४, अमान सिंह का राछरो पृ.-३१५ (अंतिम शेष भाग) - हरदौल पृ. -३२२, कजरियां का रा. पृ.-३२२, बदरिया रानी को राछरो पृ.-३२३

अन्य कवि पृ.-३२८, कृष्णबल्देव वर्मा पृ.-३२८, मु. अजमेरी पृ.-३२९, नाथूराम माहौर- पृ. ३३२, घनश्याम दास पांडेय- पृ. ३३६।

फड़ साहित्य - पृ.३३९, अन्य कवि - मैथिली शरण गुप्त - ३५३, रसिकेन्द्र - पृ. ३५४, रामचरण हयारण मित्र - पृ. ३५६, नवी बक्स फलक - पृ. ३५९, वियोगी हरि - पृ. ३६२, गौरी शंकर द्विवेदी शंकर - पृ. ३६५, राघवेन्द्र - पृ. ३६७, घासीराम व्यास - पृ. ३६७, सुभद्रा कुमारी चौहान - पृ. ३७२, भगवान दास 'बालेन्दु' - पृ. ३७४।

समानान्तर लोक साहित्य पृ.-३७६, अन्य कवि पृ.-३८२, भगवानदास दास - पृ. ३८२, श्याम सुन्दर दास बादल - पृ. ३८९, सेवकेन्द्र - पृ. ३९०, राजरानी चौहान - पृ. ३९२, लक्ष्मीप्रसाद शुक्ल वत्स - पृ. ३९३, नरोत्तम दस पाण्डेय - पृ. ३९४ 'मधु', कन्हैया लाल कलश - पृ. ३९४, रामसहाय कारीगर - पृ. ३९९, भैयालाल व्यास - पृ. ४०१, कृष्ण नंद हुंडैत - पृ. ४०२, कृष्णानन्द व्यास 'बेआस' - पृ. ४०३, भगवानदास माहौर - पृ. ४०६, शंकरलाल शुक्ल - पृ. ४०८, अवधेश - पृ. ४१०, नर्मदा प्रसाद 'गुप्त' - पृ. ४१२, ओम प्रकाश सक्सेना 'प्रकाश' - पृ. ४१६, जवाहर लाल कंचन - पृ. ४२०, बलभद्र तिवारी - पृ. ४२२, गंगाप्रसाद बरसैया - पृ. ४२४, भारतेन्दु अरजरिया इन्दु - पृ. ४२५, गुणसागर सत्यार्थी - पृ. ४२७, दुर्गेश दीक्षित - पृ. ४३१, मोहन लाल गुप्त 'चातक' - पृ. ४३३, जगन्नाथ सुमन - पृ. ४३५।

बुन्देलीगद्य-

इतिहास पृ. ४३९.-

प्राचीन गद्य का महत्व और गद्य का प्राकृत रूप पृ.- ४३९,

बुन्देली गद्य का उद्भव और विकास का स्वरूप एवं काल विभाजन पृ. ४४०

१. शौर्य एंव गाथा काल (प्रारम्भ काल १०वीं से १४वीं सदी) चम्पू गद्य और पद्यात्मक गद्य रूप पृ. ४४१

२. उपासना और लीलामृत काल (१४वीं से १७वीं सदी) - मध्यकाल पृ. ४४८

- उपदेशात्मक पद्यात्मक गद्य (विष्णुदास) पृ. ४४८
- धार्मिक एवं दार्शनिक गद्य - अक्षर अनन्य के 'आसंका गीता' की 'आसंका राम चन्द्रिका' की पृ. ४४९

● गद्य का विकास - चौरासी वैस्नवन की वार्ता पृ. ४५०
● स्फुट गद्य पृ. ४५१
३. रीति और श्रृंगार काल (१७वी से १९वी सदी)
पृष्ठभूमि पृ. ४५२
(i) मौलिक गद्य - वार्तिक गद्य पृ. ४५२
● छत्रसाल का १० दोहात्मक पत्र पृ. ४५३
● छत्रसाल का पत्र गोविन्द बल्लालपंत को पृ. ४५४
● छत्रसाल की चिट्ठी हिदेसाह के नॉव पृ. ४५५
● छत्रसाल का जगतराज और हिरदेसाह को पत्र पृ. ४५५
● जगतराज का हिरदेसाह को पत्र पृ. ४५६
(ii) व्यवहारिक गद्य पृ. ४५६
● पादारघ - इकरारनामा और अन्य पत्र पृ. ४५७
(iii) धार्मिक और साम्प्रदायिक गद्य रूप पृ. ४५७
(iv) स्फुट गद्य पृ. ४५७
● इश्तहार नामा ४५७
● स्फुट रचनाएं -
वैकुण्ठमणि शुक्ल पृ. ४५८, सबलमिश्र का नासिकेतोपाख्यान पृ. ४५८, ईशाअल्ला खाँ और रानी केतकी कहानी पृ. ४५८, बुन्देली गद्य में केतकी रानी की कहानी पृ. ४५९,
४. आधुनिक और वार्ताकाल पृ. ४६२
राजनैतिक स्थिति पृ. ४६२, सामाजिक स्थिति पृ. ४६२, धार्मिक/सांस्कृकि प्रवृत्ति पृ. ४६३, साहित्यिक प्रवृत्तियां पृ. ४६३, व्यवहारिक गद्य पत्र पृ. ४६३, चिट्ठी लेखन पृ. ४६५,
I- गद्य के विविध रुप पृ. ४६६
(१) आलेख एवं उपन्यास - पृ. ४६७, बुन्देली गद्य का नव जागरण काल - पृ. ४७०,
(२) कहानियाँ - पृ. ४७१, बुन्देली लोक कहानियाँ - पृ. ४७३, बुन्देली लोक कहानियों का महत्व - पृ. ४७५
II- बुन्देली कहानीकार - पृ. ४७६
प्रमुख साहित्यकार व कथाकार- पृ.४७६ (शिवसहाय चतुर्वेदी - पृ. ४७६, डा. हरगोविन्द गुप्त- पृ. ४७७, डा. गोविन्द मिश्र - पृ. ४७९, डा. कैलाश मड़वैया - पृ. ४७९, डा. पुष्पा मैत्रेय - पृ. ४७९, भगवान सिंह गौड़ - पृ. ४८०, राजाराम साहू विक्रम - पृ. ४८०, डा. हरिमोहन श्रीवास्तव - पृ. ४८०, डा. राम नारायण शर्मा - पृ. ४८१)
५. बुन्देली नाट्य साहित्य पृ. ४८४

● नाटक की उत्पत्ति एवं परम्परा पृ. ४८४
● बुन्देली नाट्य कला का प्रथम उत्थान काल पृ. ४८६
● बुन्देली नाट्य कला का द्वितीय उत्थान काल पृ. ४८७
● बुन्देली नाट्य कला का तृतीय उत्थान काल (एकांकी नाटक) पृ. ४८८
● बुन्देली नाट्य कला का चतुर्थ उत्थान काल पृ. ४८९
● बुन्देली लोक नाट्य साहित्य पृ. ४८९
● परम्परागत नाट्य रूप पृ.४८९ - मौनियां, कहरवा - ४९०, धुविया - ४९१, नौटंकी - ४९४, लीला नाट्य रूप - ४९३ - रामलीला - ४९४ - रासलीला ४९४ - अखाड़े ४९५,
६. आधुनिक बुन्देली नाटकों का काल पृ. ४९८
७. बुन्देली नाटक कार - डॉ. पद्म नाभ तैलंग - पृ. ४९९, डॉ. महेन्द्र वर्मा - पृ. ५००, भगवत नारायण शर्मा - पृ. ५०१, माधव शुक्ला ''मनोज'' - पृ. ५०२, डॉ. बलभद्र तिवारी - ५०३, श्याम मनोहर मिश्र - पृ. ५०३, अवध कुमार श्रीवास्तव 'अवधेश' - पृ. ५०४
८. आधुनिक नाट्य रूप - नुक्कड़ नाटक एवं स्वांग रूप - पृ. ५०५-५०६
९. बुन्देली गद्य में निबन्ध - पृ. ५०७
१०. जीवनी लेखन - पृ. ५०९
११. संस्मरण - पृ. ५१०
१२. पत्र-लेखन - पृ. ५११
१३. बुन्देली में पत्र लेखन - पृ. ५११
१४. बुन्देली साहित्य के आधार - पृ. ५१३
● बुन्देली की सहयोगी साहित्यिक पत्र पत्रिकायें - पृ. ५१३
● बुन्देली साहित्य गोष्ठियाँ - पृ. ५१४
● बुन्देली के साहित्य संस्थान - पृ. ५१६
III- लोक वार्ता साहित्य - पृ. ५१७
जनश्रुति - पृ.५१७, श्रुति - पृ. ५२२, सूक्ति साहित्य - पृ. ५२५, काव्य में कहावतें - पृ. ५२६, कहावतों में कहानियाँ - पृ. ५२८
समापन - पृ. ५३३
परिशिष्ट - पृ. ५३८
संदर्भ सूत्र - पृ. ५३८
शब्द संदर्भ - पृ. ५४१

लेखक का परिचय

डा. रामनारायण शर्मा
रामायण; 695/3 सिविल लाइन्स झाँसी
साहित्यिक परि... ग्राम मसनेह झाँसी, उ.प्र.

प्रारम्भ में पत्र पत्रिकाओं में लेखन
साहित्यिक जीवन काव्य लेखन से प्रारम्भ
... कथा ... उपन्यास रचना में ... शील

साहित्य सृजन

(1) चतुरंगिनी (बुन्देली लोक-काव्य संग्रह)
(2) सच-टुकड़ा-टुकड़ा (कहानी संग्रह)
(3) जीवन-प्रहरी (उपन्यास)
(4) बुन्देली कहानियाँ (बुन्देली भाषा में)
(5) बुन्देली भाषा साहित्य का इतिहास

अप्रकाशित

(6) अंतर्ध्वनि (कविता संग्रह)
(7) इति श्री (उपन्यास)
(8) भूले-बिसरे लोग
(9) बुन्देली - बिंदिया (बुन्देली एकांकी नाटकों का संग्रह)

डा. शर्मा के समग्र साहित्य सृजन के लिये उन्हें कवितायन
'साहित्य संस्थान' झाँसी ने 'कथा भूषण'
की उपाधि से सन् 2000 ई. में सम्मानित किया।
बुन्देलखण्ड शोध संस्थान झाँसी के पूर्व अध्यक्ष।
सम्प्रति संरक्षक - स्व. घासीराम व्यास न्यास झाँसी
संस्थापक
बुन्देली साहित्य समिति झाँसी